की जिससे आधार पर 7 नंवबर 1917 को रूस के मेहनतकश वर्ग ने रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) के नेतृत्व में सफल समाजवादी क्रांति की। रूसी सर्वहारा वर्ग ने महान क्रांतिकारी लेनिन और स्टालिन के नेतृत्व में शोषकों के स्वर्ग पर चढ़ाई की, पेरिस कम्यून की विफलता से सबक लेकर दुनिया में पहली बार मेहनतकशों का राज कायम किया। जो पूरी दुनिया के सर्वहारा वर्ग के लिए प्रेरणा स्त्रोत बना।

न सिर्फ रूस के मेहनतकशों और कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों बल्कि पूरी दुनिया के क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़े लोगों, प्रगतिशील और जनवादी तबकों के लोगों पर गोर्की की 'मां' और निकोलाई ऑस्त्रोवस्की की 'अग्निदीक्षा' उपन्यास (जिसके नायक का नाम भी पावेल है) ने अमिट छाप छोड़ी। मैक्सिम गोर्की, लेनिन से पूर्णतः प्रभावित थे तथा मार्क्सवादी विचारों से आकर्षित होने के बाद उनके घनिष्ठ मित्र बन गए। रूसी क्रांति में गोर्की जैसे महान लेखक की भूमिका को लेनिन ने शिद्दत से स्वीकारा है। मां गोर्की की एक ऐसी अतिविशिष्ट रचना है, जिसका विश्व की लगभग सभी प्रमुख भाषाओं में अनुवाद हुआ। कितने ही देशों में क्रांतिकारी आंदोलन के दरम्यान इस पुस्तक को शासकवर्ग ने प्रतिबंधित किया है। गोर्की ने जो भी लिखा, उसमें रूस की अवाम के दुख-दर्द उनकी टीसों, आहें, अभाव व भुखमरी का समावेश था। यही नहीं उनके लेखन में मजदूर वर्ग का विजयगान तथा एक नये समाज जिसमें सभी को समान अधिकार मिले का सपना संजोया गया था। उन्होंने जिस तरह के समाज की कल्पना की थी वह उनके जीवित रहते ही साकार हो गयी थी।

आज की दुनिया गवाह है कि पूंजीवादी साम्राज्यवादी विश्व व्यवस्था बेलगाम कहर ढा रही है। प्रतिरोध करने वाले समाजवादी देशों की अनुपस्थिति में अमरीकी साम्राज्यवाद के नेतृत्व में साम्राज्यवादी ताकतें, एशिया- अफ्रीकी एवं दक्षिणी अमेरिका में अपने देशीय दलाल शासक वर्गों के साथ शोषण, लूट अत्याचार और नयी गुलामी (नवउपनिवेशवाद के साये में नवउदारवाद) की विनाश लीला चला रही हैं। हमारे देश में साम्राज्यवादी ताकतों के पैरोकार संघी सांप्रदायिक फासिस्ट, कॉर्पोरेट गुलामी को जनता पर लाद रहें हैं। ऐसे संकटपूर्ण समय में शोषित, उत्पीड़ित और संघर्षशील जनता के वैचारिक संसाधन की शक्ल में गोर्की की मां आज भी एक संबल के रूप में विद्यमान है। उन्नीसवीं शताब्दी के पांचवे -छठे दशकों में जिस प्रकार रूसी क्रांतिकारी- जनवादियों ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की हिमायत की थी। उसी प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त और बीसवीं शताब्दी के पहले दो दशकों में लेनिन जैसे महान क्रांतिकारी नेता ने अनेक बार भारत की आजादी की लड़ाई का समर्थन किया। उन्होंने 1857 के विद्रोह को भारत की आजादी की पहली लड़ाई की संज्ञा दी थी, जिसे कुछ पश्चिमी साहित्यकारों ने सिपाही विद्रोह कहकर उसका महत्व कम करना चाहा था। 1907 में उन्होंने भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अत्याचारों के बारे में लिखा। 1908 लोकमान्य तिलक की गिरफ्तारी के सिलसिले में बंबई ने जो हड़ताल की, लेनिन ने भारत में सर्वहारा की जागृति के रूप में उसका अभिनंदन किया। 1920 में उन्होंने साफतौर पर लिखा था कि भारत विद्रोही एशिया का नेतृत्व कर रहा है। लेनिन की तरह गोर्की ने भी लिखा था कि भारत में इस बात का विश्वास दिलाने वाली आवाज अधिकाधिक जोर पकड़ती जा रही है कि भारत में अंग्रेजी राज के दिन पूरे हो गए हैं।

अंधकार के विरूद्ध प्रकाश, निराशा के विरूद्ध आशा तथा अन्यायपूर्ण व्यवस्था के विरूद्ध न्याय और समानता की लड़ाई में आज भी 'मां' अपरिहार्य है। उपन्यास में अपनी गिरफ्तारी के समय जनता को संबोधित करते हुए मां ने जो कहा था उस समय के रूसी अवाम को जितनी जरूरत थी आज के भारतीय अवाम के लिए भी उतनी ही जरूरी है -हमारे बच्चे दुनिया में आगे बढ़ रहे हैं। मैं तो इसे इसी तरह से देखती हूं वे सारी दुनिया में फैल गए हैं और दुनिया के कोने- कोने से आकर वे एक ही लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहे है। जिन लोगों के हदय सबसे शुद्ध हैं जिनके मस्तिष्क सबसे श्रेष्ठ हैं। वे अत्याचार के खिलाफ बढ़ रहे हैं और झूठ को अपने ताकतवर पांवों तले कुचल रहे हैं। वे नौजवान हैं और स्वस्थ हैं उनकी सारी शक्ति एक ही लक्ष्य न्याय को प्राप्त करने के लिए खर्च हो रही है। वे मानव जाति के दुख को मिटाने के लिए इस धरती पर से दुख का नामोनिशान मिटा देने के लिए और कुरूपता पर विजय प्राप्त करने के लिए लिए मैदान में उतरे हैं। और मुझे पूरा विश्वास है कि उनकी विजय अवश्य होगी। जैसा कि किसी ने कहा कि वे एक नया सूर्य उगाने के लिए निकले हैं। और वे इस सूर्य को उगाकर रहेंगे। वे टूटे हुए दिलों को जोड़ने के लिए निकले हैं और वे उन्हे जोड़कर रहेंगे।

इस मामले में हम पिछले कुछ सालों में देखते हैं कि देश में अंधकार के खिलाफ नया सूर्य उगाने वाले तर्कशील दाभोलकर, पंसारे, कलबुर्गी, गौरी लंकेश, विद्यार्थी रोहित वेमुला, बंगाल के भांगड़ किसान आंदोलन के मोफिजुल-आलमगीर-हाफिजुल तथा तूतीकोरिन में स्टरलाइट कंपनी के खिलाफ आंदोलन में शहीद हुए लोगों समेत जल- जंगल-जमीन, रोजी-रोटी व जनवाद की लड़ाई के तमाम शहीद और मां उपन्यास के नायक पावेल देश- काल- परिस्थिति को दरकिनार कर एकाकार हो जाते हैं।

संदर्भः 1. प्रेमचंद और गोर्की : दो अमर प्रतिभाएं - मदनलाल 'मधु'
2. 'मां' - मैक्सिम गोर्की
3. नयी पीढ़ी के लिए गोर्की प्रेमचंद लू शून- राणा प्रताप ■